Name - Suraj Kumar

College name - Shakuntalam Institute of teacher Education

Sasaram Rohtas (Bihar)

Paper - C_4 (B.Ed 1st year)

Date - 10/06/2020

भाषा शिक्षण सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त

NOTE- कविता को पद्यांश, काव्य एवं कविता कहते हैं। गद्य को गद्यांश कहते हैं।

- भाषा शिक्षण बालक के भाषा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- भाषा के विभिन्न विधाओं को पढ़ाना, विभिन्न विधाओं से बालक को अवगत कराना, ~~अवगत करना~~ ~~विलक्षण भाषिक क्षमता को~~ बालक की विलक्षण भाषिक क्षमता को विकसित करने के लिए भाषा शिक्षक के लिए अनिवार्य है।
- भाषा के विभिन्न विधाओं के रूप में हम प्राथमिक कक्षाओं में गद्यांश, पद्यांश, रचना और व्याकरण का शिक्षण कर सकते हैं।

हिन्दी गद्य शिक्षण

Hindi prose Teaching

गद्य → साहित्य की अनेक विधाओं में गद्य का स्थान महत्वपूर्ण है।

- गद्य के माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन में विचारों का आदान प्रदान करते हैं।
- गद्य साहित्य का क्षेत्र अधिक विशाल तथा व्यापक है।
- भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक संभव होता है।
- [पद्यांश (कविता)] में हमारा ध्यान साहित्यिक सौन्दर्य तत्वों की ओर अधिक रहता है।
- अतः शिक्षण में भाषिक तत्वों की उपेक्षा स्वाभाविक है, पर गद्य-शिक्षण में भाषिक तत्वों का ज्ञान प्रदान करने का विशेष अवसर मिलता है। भाषिक तत्वों, शब्द भण्डार की वृद्धि, शब्दों के शुद्ध उच्चारण, अर्थ, प्रयोग, एवं मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि) के रचना, वाक्य रचना, अनुच्छेद रचना, की दृष्टि से गद्य-शिक्षण की ज्ञान एवं भाषिक कौशलों के अभ्यास उपयोगिता सर्वमान्य है।
- ज्ञान-विज्ञान के परिचय की दृष्टि से गद्य शिक्षण का विशेष महत्व है, क्योंकि इसके माध्यम से जीवन और जगत के सभी पक्षों का ज्ञान बालकों को प्राप्त होता है।
- विषय-सामग्री की जितनी विविधता गद्य साहित्य से सम्भव है, उतनी कविता (पद्यांश) में सम्भव ही नहीं।
- ज्ञानोपलब्धि का साधन तो गद्य साहित्य ही है।
- 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' उक्ति इस बात का प्रमाण है कि भाषा जितना परिष्कृत, प्रांजल और परिनिष्ठित रूप गद्य में मिलता है, इतना पद्य (कविता) में नहीं। ~~कविता में~~ पद्यांश (कविता) में व्याकरण का उल्लंघन पाया जाता है, पर गद्यकार को तो भाषा की शुद्धता, स्वच्छता और उसके व्याकरण-सम्मत रूप का सदा ध्यान रखना पड़ता है।
- अतः भाषा के शुद्ध, परिनिष्ठित रूप का ज्ञान गद्य साहित्य के अध्ययन से ही सम्भव है।

Scanned with CamScanner

NOTE- किसी समय यह माना जाता था कि बौद्धिक पक्ष की साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम गद्य है, और भावनात्मक पक्ष की साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम कविता है। (मान्यता थी)
गद्य विचार-प्रधान साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है और कविता भाव-प्रधान साहित्य का। गद्य अपेक्षाकृत बौद्धिक, सूचनात्मक, शुष्क और नीरस रचना है, और कविता भावानात्मक, रसात्मक, सरस और आह्लादकारी रचना है।
पर यह मान्यता भी मिथ्या यानि झूठा सिद्ध हो गई है जितने भी ऊपर लिखे हैं।

आधुनिक युग में सच्चाई:-

गद्य रचनाएँ भी रसात्मक होती हैं। गद्यांश में कहानी, उपन्यास, नाटक एकांकी आदि तो रसात्मक होते ही हैं, यात्रा वर्णन, जीवनी, निबन्ध आदि रचनाएँ भी रसात्मक शैली में लिखी जाती है।

- केवल भावात्मक भाषा पर पद्यांश (कविता) का ही एकाधिकार नहीं है।
- गद्यांश (गद्य) के माध्यम से भावात्मक एवं ~~काव्य~~ काव्यात्मक अभिव्यक्ति इतनी सरस, सशक्त, पुष्ट और प्रभावपूर्ण होने लगती है कि गद्य भी कविता के समान ही हृदय को स्पर्श करता है।
- गद्य भी भावनाओं से ओत-प्रोत होता है।

⇒ गद्य साहित्य के प्रकार :—

गद्य साहित्य को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:—

(1.) सूचनात्मक गद्य साहित्य ⇒

(2.) वर्णनात्मक गद्य साहित्य ⇒

(3) भावनात्मक गद्य साहित्य ⇒

1- कथाएँ - ऐतिहासिक, ~~धार्मि~~ पौराणिक, शिक्षात्मक, काल्पनिक, जीवन-चरित्र और आत्मकथाएँ भी इसी में आती हैं।

2. वर्णन - यात्राओं और प्राकृतिक दृश्यों का सजीव चित्रण। वैज्ञानिक आविष्कार तथा खोज-सम्बन्धी लेख कला के द्वारा विज्ञान के सत्यों के निकट ले जाता है। विभिन्न देशों के रहन-सहन, रीति-रिवाज, तथा समाज के व्यवहार करने की रीतियाँ, निबन्ध साहित्य में भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयों की विवेचना से छात्रों को सामान्य ज्ञान होता है।

Scanned with CamScanner

- साहित्य की दृष्टि से दोनों विधायें एक दूसरे के पूरक हैं।
- नीरज के अनुसार – "गद्य जहाँ भावों की अभिव्यक्ति होता है, वहाँ कविता जन्म लेती है, और जहाँ कविता विनश्वर तथा लाचार होती वहाँ गीत आते हैं। जीवन जहाँ एक है, वहाँ तक वह काव्य है, जहाँ एक न होकर अनेक है, वहाँ विज्ञान है। अनेकत्व से एकत्व की ओर जाना कविता है और एकत्व से अनेकत्व की ओर जाना गद्य है।"

= उपर्युक्त परिभाषाओं एवं विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि पद्य में प्रभावित करने की, गद्य की अपेक्षा अधिक शक्ति है। पद्य हमारे हृदय को स्पर्श कर भावनाओं को प्रभावित करती है, जबकि गद्य हमारे मस्तिष्क और बुद्धि को ही प्रभावित करता है।

- सूरज के अनुसार : हमारे विचार से पद्य या कविता का सम्बन्ध हमारे हृदय से होता है, पद्य में रोचकता और प्रशान्तता का भाव होता है। पद्य या कविता छन्दोबद्ध तथा नियमित गति में होने के कारण ताल, गति, गति तथा लय आदि का पूरा ध्यान रखा जाता है। पद्य में रागमय होता है, एवं इसका सम्बन्ध हृदय से होता है, हृदय को झंकृत करने की शक्ति होती है।

पद्य यानि कविता व्याकरण के बन्धनों से मुक्त होती है, जबकि गद्यांश में व्याकरण की प्रमुख भूमिका रहती है। कविता यानी पद्यांश में विराम चिह्नों का इसमें विशेष ध्यान रखा जाता है। व्याकरण में नियमों से बंधा होने के कारण गद्य में उतनी सरलता नहीं होती जितनी की पद्य में। गद्यांश में उत्सुकता और कौतूहल नहीं होता है, जबकि कविता इनसे ओत-प्रोत होती है।

NOTE:- कविता से अनुभूति होती है, एवं गद्य से ज्ञान बढ़ता है।

(पद्य) कविता एवं गद्यांश की शिक्षण विधियों में अन्तर :-

सूरज के विचारानुसार :- जैसा कि हम जानते हैं कि कविता यानि पद्यांश में गति, गति तथा लय आदि का पूरा-पूरा ध्यान दिया जाता है। इसका सम्बन्ध हृदय, रोचकता, छन्दोबद्ध, नियमित गति, रागमय, एवं प्रभावोत्पादक शक्ति होती है। इसमें कवि के शब्दों को जादू के समान अनुभव होता है। पद्यांश में कवि के कल्पनालोक में विचरण भी करना है।

और गद्यांश में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान, अर्थ बोध, शब्द भण्डार बुद्धि होती है। गद्य में व्याकरण की प्रमुख भूमिका रहती है। गद्यांश में नीरसता तथा संगीत के अभाव के कारण उसकी शिक्षा में एक नियमित यान्त्रिकता रहती है।

Scanned with CamScanner

कविता तथा गद्यांश शिक्षण में अन्तर :-

- गद्यांश में अर्थ बोध, शब्द भण्डार के साथ-2 मौन वाचन का विशेष महत्व गद्य शिक्षण में दिया जाता है।
- जबकि पद्यांश (कविता में) मौन वाचन को कोई स्थान नहीं होता है। इसका सम्बन्ध हृदय को झंकृत करने की शक्ति, रोचकता, छन्दोबद्ध, निर्धारित तथा रागमय एवं कविता का शिक्षण सस्वर ही प्रभावशाली होता है।
- कविता (काव्य, पद्यांश) शिक्षण का मुख्य छात्रों को सौन्दर्य बोध करना या उनकी सौन्दर्यानुभूति को जाग्रत करना है।
- जबकि गद्य शिक्षण का उद्देश्य अर्थ, बोध को समझते हुए छात्रों की तार्किक शक्ति का विकास करना है।
- गद्यांश में विद्यार्थियों को सृजनात्मकता को बढ़ाते हुए प्रत्येक अन्विति(इकाई) के शब्दों के अर्थ बताए जाते है। जबकि कविता/पद्य/काव्य में ऐसा नहीं होता है।

- गद्यांश के पाठ को अनेक 'अन्वितियों (इकाइयों) में विभाजित करके पढ़ाया जा सकता है।
- लेकिन- पद्य (कविता, काव्य) को यहाँ तक सम्भव होता है, एक ही अन्विति में प्रस्तुत किया जाता है।

गद्य तथा पद्य में तुलना

पद्यांश (कविता, काव्य) शिक्षण	गद्यांश-शिक्षण
1. सौन्दर्यानुभूति का विकास	1. शब्द भण्डार तथा सुक्ति भण्डार की वृद्धि-
2. कल्पना का विकास	• वाक्य प्रयोग द्वारा
3. नीति - प्रदायक अन्यतम साधन	• खण्ड शब्द द्वारा, व्याख्या द्वारा
4. भावनाओं का परिस्करण	• समास विग्रह द्वारा
5. बौद्धिक- विकास	• सन्धि - विच्छेद द्वारा
6. व्यक्तित्व का पूर्ण विकास	• उपसर्ग द्वारा, सहचर शब्दों द्वारा
7. प्रत्येक शब्द में संदेश	2. अन्तर्कथा द्वारा उदाहरण द्वारा
8. आन्तरिक अभिव्यक्ति	3. भाषा सम्बन्धी ज्ञान - बौद्धिक विकास
9. सर्वोच्च कला	4. पर्यायवाची
10- अभ्यास करना	5. घटना द्वारा
11- समानान्तर उद्धरण	6. उदाहरण द्वारा, विचार विश्लेषण
12- अनेकत्व में एकत्व	7. विलोम शब्दों द्वारा
NOTE- इसमें व्याकरण का महत्व नहीं होता है।	8. प्रश्नो द्वारा (
	NOTE- इसमें व्याकरण की जानकारी होता है।

Scanned with CamScanner